कैंसर से बचाव व समय पर इलाज का अभियान

भारत डोगरा

हाल के समय में कैंसर के केसों की संख्या बढ़ती दिखाई दे रही है। हमारे देश में कैंसर के लगभग सात लाख केस हर एक वर्ष में सामने आ रहे हैं। इसकी एक वजह यह हो सकती है कि कुछ तरह के कैंसर तेज़ी से बढ़ रहे हैं, व एक वजह यह हो सकती है कि पहले जो कैंसर छिपे रह जाते हैं वे अब सामने आ रहे हैं क्योंकि अधिक मरीज़ इलाज व जांच के लिए आते हैं। पर इसमें एक बड़ी समस्या यह है कि अनेक मरीज़ प्रायः तब इलाज के लिए आते हैं जब कैंसर बहुत आगे बढ़ चुका होता है।

इस स्थिति में कैंसर को ठीक करने व मरीज़ का जीवन बचाने की संभावना बहुत कम हो चुकी होती है। अतः यह ज़रूरी है कि कैंसर की पहचान सही समय पर, आरंभिक स्थिति में हो जब इसका इलाज करना व मरीज़ का जीवन बचाना संभव है।

देर से कैंसर की पहचान होने की स्थिति महिलाओं के संदर्भ में तो और भी अधिक है क्योंकि विशेषकर ग्रामीण व निर्धन परिवारों में महिलाओं के लिए आरंभिक स्थिति में इलाज के लिए पहुंचने की संभावना और भी कम होती है।

जो कैंसर महिलाओं में अधिक देखे जा रहे हैं (जैसे सर्विक्स का कैंसर व स्तन कैंसर) उनमें वैसे भी संकोच के कारण समय पर जांच न करवाने की संभावना और भी ज़्यादा होती है।

अतः यदि महिलाओं के कैंसर का समय पर इलाज करना है तो इसके लिए विशेष अभियान चलाने की बहुत ज़रूरत है ताकि जांच से कैंसर को आरंभिक स्थिति में ही पकड़ा जा सके, और इसका इलाज हो सके। इस तरह के अभियान तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल राज्यों में सफलतापूर्वक चल चुके हैं। इसके अतिरिक्त अपेक्षाकृत छोटे प्रयास महाराष्ट्र में भी हुए हैं। इन राज्यों में स्वास्थ्य व चिकित्सा व्यवस्थाएं अपेक्षाकृत बेहतर मानी गई हैं। अब ऐसा ही प्रयास छत्तीसगढ़ में आरंभिक स्थिति में है जहां स्वास्थ्य व चिकित्सा व्यवस्था

अपेक्षाकृत कम बेहतर स्थिति में मानी गई है। अतः यहां ऐसे अभियान की सफलता और विशेषकर उचित प्रशिक्षण के लिए विशेष प्रयास करना होगा।

छत्तीसगढ़ में महिलाओं के कैंसर से बचाव और आरंभिक स्थिति में पहचान के अभियान के लिए यहां के बिलासपुर ज़िले में कार्यरत जन स्वास्थ्य सहयोग ने विशेष प्रयास किया है। इस संस्था से जुड़े डॉक्टरों व स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने अपने गनियारी स्थित अस्पताल व स्वास्थ्य केंद्रों व उप-केंद्रों में इस दर्द को बार-बार अनुभव किया है कि कैंसर ग्रस्त महिला जब इलाज के लिए पहुंचती हैं तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इस स्थिति में वे उसके दर्द को कम कर सकते हैं पर उसका जीवन नहीं बचा सकते हैं। अतः उन्होंने तमिलनाडु के प्रयास को नज़दीक से देखा। फिर राज्य सरकार से ऐसा प्रयास छत्तीसगढ़ में करने के लिए पैरवी की। साथ में जन स्वास्थ्य अभियान ने इस अभियान के लिए प्रशिक्षण की ज़िम्मेदारी भी स्वीकार की है। इस अभियान के आंरभिक दौर में बिलासपुर ज़िले के कोटा प्रखंड में पायलट परियोजना शुरू भी हो चुकी है जिसके अंतर्गत स्वास्थ्य कैंपों का आयोजन चल रहा है।

इन महिला स्वास्थ्य कैंपों में विशेषकर महिलाओं के तीन तरह के कैंसर के लिए जांच की जाती है जो यहां सबसे अधिक पाए जाते हैं - सर्विक्स कैंसर (गर्भाशय या बच्चेदानी के मुंह का कैंसर), स्तन कैंसर व मुंह का कैंसर। इसके साथ ब्लड प्रेशर व मधुमेह की जांच भी की जाती है ताकि इन कैंपों के आयोजन का और व्यापक लाभ प्राप्त किया जा सके।

इन महिला स्वास्थ्य कैंपों के आयोजन से जुड़ी हुई एक बड़ी बात यह है कि इनमें यदि किसी कैंसर का पता चलेगा तो उसके निशुल्क इलाज की व्यवस्था सरकार द्वारा की जाएगी। यह व्यवस्था तमिलनाडु में की गई थी और आगे छत्तीसगढ़ के लिए भी यही योजना है हालांकि किस हद तक यह वायदा निभाया जाएगा यह तो आगे चलकर ही पता चलेगा।

इसके साथ कैंसर से बचाव की बात बहुत ज़रूरी है। जन स्वास्थ्य सहयोग ने अपने स्वास्थ्य प्रयासों में स्वास्थ्य समस्याओं को समाज के व्यापक संदर्भ से जोड़कर देखा है जिससे बचाव के बारे में बेहतर समझ बन सकती है।

कम आयु में विवाह होने, कम आयु में व बार-बार गर्भधारण करने से सर्विक्स कैंसर की संभावना बढ़ती है। ये परिस्थितियां ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धन परिवारों में अधिक देखी जाती हैं। इसके अतिरिक्त स्नान घर के अभाव में या अन्य कारणों से जननांगों की ठीक से सफाई न रख सकने के कारण व माहवारी के समय सैनेट्री नैपकीन आदि की उपलब्धता न होने के कारण ठीक से सफाई न रख पाने के कारण भी इस समस्या की संभावना बढ़ती है।

ये वे समस्याएं हैं जो निर्धन परिवारों में अधिक पाई जाती हैं। इन्हें कम करने का अभियान चले तो इनसे कई अन्य लाभ मिलेंगे पर साथ में सर्विक्स कैंसर से बचाव की संभावना भी बढ़ेगी।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य सामान्य कारण हैं जो किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं है। जैसे एक से अधिक यौन साथी होना या पति का एक से अधिक यौन साथी होना या यौन संक्रमित बीमारियों की उपस्थिति, एच.आई.वी. एड्स की बीमारी या जननांग नली का संक्रमण, विशेषकर एचपीवी।

30 वर्ष व उससे अधिक आयु की महिलाओं को इन कैंपों में प्रोत्साहित किया जाता है कि वे आंतरिक जांच करवाकर सर्विक्स कैंसर की संभावना के बारे में पता करवा लें ताकि कैंसर से पहले की या आरंभिक स्थिति पाई जाए तो उसका समय पर इलाज करवा लिया जाए। इस स्थिति में इलाज करना व मरीज़ के जीवन को बचाना संभव है। इसके लिए निशुल्क इलाज के प्रावधान के साथ कैंसर के इलाज के अधिक केंद्र स्थापित करना ज़रूरी है क्योंकि जब अधिक केस सामने आएंगे तो उनके इलाज की समुचित व्यवस्था जगह-जगह पर होना ज़रूरी है।

जन स्वास्थ्य सहयोग के गनियारी स्थित अस्पताल में एक वर्ष में कैंसर के 500 मरीज़ इलाज के लिए आते हैं। इनमें से 200 से 225 (40 से 45 प्रतिशत) सर्विक्स कैंसर के मरीज़ होते हैं। इनमें से 80 प्रतिशत इतनी देर से आते हैं कि कैंसर इतना बढ़ चुका होता है कि जीवन बचाना संभव नहीं होता है। पूरे देश में भी सर्विक्स कैंसर के 70 प्रतिशत मरीज़ों की मृत्यु हो जाती है, 30 प्रतिशत को ही बचाया जा पाता है।

स्तन कैंसर की संभावना की आरंभिक जांच अपेक्षाकृत सरल है और थोड़ी सी जानकारी मिलने के बाद अधिकांश महिलाएं इस जांच को स्वयं समय-समय पर कर सकती हैं। महिला स्वास्थ्य कैंप में यह जानकारी महिलाओं को दी जाती है व यहां जांच भी की जाती है। आरंभिक जांच में संभावना सामने आने पर आगे अधिक विस्तृत जांच के लिए भेजा जाता है।

यही स्थिति मुंह के कैंसर की भी है यह पुरुषों में अधिक होता है। इसका सबसे बड़ा कारण तंबाकू का विभिन्न रूपों में सेवन करना है। इस संदर्भ में बचाव की संभावना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है व बचाव के उपाय के रूप में तंबाकू के उपयोग में कमी लाना एक अपेक्षाकृत सीधा-सरल उपाय भी है। यदि ऐसा संभव हुआ तो मुंह के कैंसर के साथ बहुत-सी अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं में भी कमी आ सकेगी। ***(स्रोत फीचर्स)***